Vijay Kumar Jha
Assot Prof Deptt in History
M.S.J. College Rajnagar.

Degree II Part
Sources of Ancient Indian History.

इतिहास उन घटनाओं का संग्रह है जो भूतकाल में घटित हो चुकी हैं। यद्यपि कि वे घटनाएँ जिनका कोई प्रत्यक्ष दृश्य नहीं है फिर भी हम उन घटनाओं के बारे में जानकारी रखते हैं। वस्तुतः महत्वपूर्ण तथ्यों को चुनकर अतीत के पुनर्निर्माण करने को ही इतिहास कहते हैं। इतिहास घटित घटनाओं का संग्रह है। महत्वपूर्ण तथ्य हमें विभिन्न रूपों में प्राप्त होते हैं जिन्हें इतिहास के स्रोत कहा जाता है। किन्तु इन तथ्यों का क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रमाणिक स्रोतों का अभाव है। पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने यहाँ तक कह डाला है कि भारतीयों में इतिहास लेखन कि रुचि नहीं थी। ऐसे मत के समर्थक फ्लीट, स्मिथ, मजूमदार त्रिपाठी प्रमुख थे। डा० आर० एस० त्रिपाठी ने कहा है कि प्राचीन भारतीय वाङ्मय विशाद एवं समृद्ध होते हुये भी ऐतिहासिक सामग्री में न्यूनतम है। इसका कारण यह नहीं कि भारत का अतीत स्मरणीय घटनाओं से सर्वथा शून्य था बल्कि साहित्यिक क्षेत्र कि उपेक्षा के कारण ऐतिहासिक मेधा कि कमी रही होगी। ऐसा माना जाता है कि कोई भी ऐसा ग्रंथ उपलब्ध नहीं है जिसे पूर्ण इतिहास ग्रंथ कि संज्ञा दिया जा सके।

अध्ययन कि दृष्टि से ऐतिहासिक स्रोत को निम्न भागों में विभाजित किया गया है

(1) साहित्यिक स्रोत
(2) पुरातात्विक स्रोत

साहित्यिक स्रोत को दो भागों में बांटा गया है।

JANUARY 2019
Mo Tu We Th Fr Sa
1 2 3 4 5
8 9 10 11 12
15 16 17 18 19
22 23 24 25 26
29 30 31

Scanned with CamScanner

(i) धार्मिक (ii) धर्मनिर्पेक्ष

धार्मिक साहित्य का साहित्य का तीन भाग है —
(i) बौद्ध साहित्य (ii) जैन साहित्य (iii) ब्राह्मण ग्रंथ।
धर्म निरपेक्ष साहित्य का दो भाग है — (i) कल्पना प्रधान लोक साहित्य (ii) विदेशी यात्रियों के वृतांत।

साहित्यिक धार्मिक ग्रंथ में निम्न साहित्य है —

(1) ब्राह्मणग्रंथ :— ब्राह्मण ग्रंथ का अर्थ यज्ञ के विषयों को प्रतिपादित करना है। इसमें वैदिक श्लोकों एवं टिकाओ प्रस्तुत किया गया है। प्रमुख ब्राह्मण धर्मग्रंथ — ऐतरेय, शतपथ, पंचविश एवं गोपथ है।

(2) आरण्यक :— आरण्यक ऐसे ग्रंथ को कहा जाता है जिसका अध्ययन वन में किया जा सके।

(3) उपनिषद :— उप का अर्थ निकट एवं निषद का अर्थ बैठना होता है अर्थात गुरु के बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। प्रमुख उपनिषद — वृहदारण्य एवं छांदोग्य है।

(4) वेदांग :— वैदिक अध्ययन के विशेष विधाओं कि शाखाओं को वेदांग कहा जाता है। वेदांग छः है — शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष।

(5) स्मृति :— स्मृति दो है मनु और याज्ञवल्क्य।

(6) महाकाव्य :— महाकाव्य रामायण एवं महाभारत आते है।

(7) वेद :— वेद आर्यों के प्राचीनतम धर्म ग्रंथ है जो चार है प्राचीनतम वेद ऋग्वेद है तथा अन्य सामवेद, यजुर्वेद एवं अर्थववेद है। वेदों का भारतीय संस्कृति का विशेष महत्व है आर्यों के विषय कि समस्त जानकारी वेदों से मिलती है।

(8) पुराण — पुराणों कि कुल संख्या 18 है जिनमें मुख्य चार है → मत्स्य, भागवत, विष्णु, वायु एवं ब्रह्माण्ड पुराण को अधे प्राचीन है। पुराण अंधकार में आलोक का काम करता है।

(9) बौद्ध धर्म ग्रंथ तीन है जो बुद्ध कालीन इतिहास पर प्रकाश डालता है। — (i) पिटक — विनय पिटक, (ii) सुत्त पिटक (iii) अभिधम्म पिटक इसकी भाषा पाली है। मिलिन्द पनहो, दीपवंश, महावंश मुख्य बौद्ध ग्रंथ है।

Scanned with Cam

(10) जैन ग्रंथ :— भद्रबाहुचरित्र, परिशिष्टपर्व, पुण्याश्रव कथा कोष, लोक विभाग आदि मुख्य है।

(11) धर्मनिरपेक्ष साहित्य — कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विशाखदत्त का मुद्रा राक्षस, कालिदास कि मालविकाग्निमित्र, बाणभट्ट का हर्षचरित्र, पातंजलि का महाभाष्य, गार्गी संहिता, कल्हण का राजतरंगिणी, परिमल गुप्त का नवसाहशांक चरित, वाक्पतिराज का गौडवाहो, विल्हण का विक्रमांकदेव चरित, चन्दरबरदाई का पृथ्वीराजरासो आदि मुख्य ग्रंथ है।

(12) विदेशी यात्रियों के वृतांत —

(I) यूनानी यात्री — हेरोडोटस, टेसीयस, मेगास्थनीज जिसने 'इण्डिका नामक ग्रंथ कि रचना किया, टॉलमी, प्लिनि ओ भूगोल कि जानकारि दिया।

(II) तिब्बती यात्री — लामा तारानाथ

(III) मुसलमान यात्री :— अलबरुनी, अलबिलादुरी सुलेमान, अलमसूदि

पुरातात्विक स्रोत :—

(1) अभिलेख :— शिलालेख, स्तम्भलेख, धातुपत्रलेख, प्रस्तरपट्टी लेख। अधिकांश अभिलेखों कि भाषा ब्राह्मी है जो बाये से दाहिने कि ओर लिखी जाती है। कुछ अभिलेख भाषा खरोष्टी लिपि है कुछ अभिलेख तामिल, कन्नड, तेलगु भाषा मे भी है

(2) स्मारक :— स्मारक कि महत्वपूर्ण नमूना हड़प्पा एवं मोहनजोदारो है जहाँ उत्खनन से विश्व प्रसिद्ध सभ्यता का पता चला है। स्मारक तक्षशिला, नालन्दा विश्वविद्यालय भी स्मारक के श्रेणी मे आता है जिससे सांस्कृतिक क्षेत्र मे आर्थिक जानकारि मिलती है। इन स्मारको से तत्कालिन कला के क्षेत्र मे विशेष प्रकाश पड़ता है पाटलिपुत्र मे खुदाई से मौर्यकालीन स्तम्भों का पता चलता है।

(3) मुद्रा :— स्वर्ण, रजत, तांबे के मुद्रा से प्राचीन भारत के आर्थिक स्थिति, धार्मिक दशा, तत्कालीन कला आदि कि जानकारि मिलती है

JANUARY 2019
Su Mo Tu We Th Fr Sa
1 2 3 4 5
6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19
20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30 31

Sunday 13

Scanned with Cam